Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Double Blind Peer Reviewed)

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय संगीत पर हिन्दू धर्म का प्रभाव

डॉ. परमजीत कौर

सारांश

भारतीय इतिहास मर्मज्ञ प्रोफेसर ए.एल. वासम के शब्दों में ''प्राचीन भारत की समग्र अवशेष धर्मोन्मुख है या कम से कम धार्मिक उद्देश्य को आगे रखकर निर्मित हुये। हिन्दू धर्म तथा इससे जन्य बौद्ध तथा जैन धर्म भी अपने धर्म प्रचार के लिए संगीत को अपनी जैनेटिक विशेषता मानते हैं। योग तरंगिणी में नाद की महत्ता को अति–आवश्यक बताया गया है :–

न नादेन बिना ज्ञानं न नादेन बिना शिवः।
नादरूप पर ज्योति नादरूपि परो हरिः।।

यवनों के भारत आगमन से संगीत का स्वरूप धीरे–धीरे कलात्मक होता गया तथा मुगल काल तक जहां शास्त्रीय संगीत ऊँचाईयों को छूने लगा वहीं इसमें श्रृंगार रस हावी होने लगा। इतना होन पर भी शास्त्रीय संगीत का मुख्य मनोरथ कृष्ण जी के प्रेम को उजागर कर मोक्ष द्वार में प्रवेश पाना है।

भारतीय संगीत की यात्रा हिन्दू धर्म के प्रचार–प्रसार का सशक्त माध्यम रही है। चार वेद भारतीय संस्कृति तथा हिन्दू धर्म के प्राचीनतम स्तम्भ है। सामवेद पूर्णतया संगीत को समर्पित है तथा इसमें गाई जाने वाली लगभग सभी ऋचाएं ऋग्वेद से ली गई हैं। वेदों के अनुसार ईश्वर प्राप्ति का मार्ग संगीत द्वारा साध्य है। ऋग्वेद में कहा गया है :–

''अभि स्वरन्ति बघ्वो मनीषिणों राजानमस्य भुवनस्य निंसते।''

– ऋग्वेद 6/85/3

अर्थात् अनेक मनीषी विश्व के महाराजाधिराज भगवान की ओर संगीतमय स्वर लगाते हैं और उन्हीं के द्वारा उससे मिलते हैं। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए ज्ञान मार्ग तथा कर्मयोग मनुष्य के लिए कठिन है। इसलिए भक्ति भावना से प्राप्त करने का सरल मार्ग अपनाना चाहिए।

''स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः।''

– ऋग्वेद 8/33/2

अर्थात् हे शिष्य, तुम अपने आत्मिक उत्थान की इच्छा से मेरे पास आए हो, मैं तुम्हें ईश्वर का उपदेश करता हूं, तुम उसे प्राप्त करने के लिए संगीत के साथ उसे पुकारोगे तो वह हृदय मार्ग से प्रकट होकर अपना प्यार .... प्रदान करेगा।

साम शब्द का विश्लेषण करते हुए डा. परांजपे लिखते हैं, ''गीत तथा उसी की धुन के 'साम' संज्ञा भी रही है। साम–धुन या स्वरावली के लिए पर्यायवाची शब्द रहा है। यह तत्कालीन जन संगीत के अन्तर्गत गाई जाने वाली धुनें थी। इन्हीं की तर्ज पर वैदिक मंत्र गाये जाते थे।''

संगीत विभाग, एस.डी. महाविद्यालय (लाहौर), अम्बाला कैंट

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

वेदों के अतिरिक्त रामायण तथा महाभारत हिन्दू धर्म के महानतम् ग्रन्थ हैं जो धर्म ही नहीं प्रत्येक व्यक्ति को एक उत्तम जीवनशैली को अपनाने की शिक्षा प्रदान करते हैं। इन ग्रन्थों के नायक तथा महानायक संगीत के दैवी रूप से धर्म का प्रचार करते थे। यहां तक कि रामायण के खलनायक रावण भी संगीत–शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान थे। महाभारत काल में जहां श्रीकृष्ण बांसुरी बजाने में अपना कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं रखते थे ठीक उसी प्रकार वीर अर्जुन भी वीणावादन में अपना कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं रखते थे।

बुद्ध धर्म (जोकि हिन्दू धर्म का ही एक अंग है) में संगीत का बहुत महत्व है। महात्मा बुद्ध को भगवान् विष्णु का नौवां अवतार मानते हैं। महान् इतिहासकार ए.एल. वासम, 'गीतगोविन्द' के रचयिता जयदेव को उद्धृत करते हुए लिखते हैं कि ''विष्णु ने बुद्ध का अवतार प्राणियों से दया भाव के चलते धारण किया।'' महात्मा बुद्ध के समय संगीत जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग था। महात्मा बुद्ध स्वयं संगीत कला में निपुण थे। ''नालन्दा, विक्रमशीला तथा तदन्तपुरी जैसे विश्वविद्यालयों में भी गान्धर्व का स्वतन्त्र निकाय (फेकल्टी) था। इनके अधिष्ठाताओं के रूप में भारत–विख्यात संगीतज्ञों की नियुक्ति की जाती थी। सम्पन्न परिवारों में बालक–बालिकाओं की संगीत शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता था।''

जैन धर्म में ईश्वर स्वरूप को नहीं माना जाता परन्तु पुनर्जन्म तथा स्वतन्त्र आत्मा (जो किसी प्रकार के कर्मों के बन्धन से बंधी हुई है) के लिए कठिन जीवन संहिता को अपनाया जाता है। 528 ई.पू. जब ब्राह्मणों का बहुत महत्त्व था तथा समाज वर्गाश्रमों में बंटा हुआ था, को तोड़ने के प्रयत्न किए गए। अब संगीत ब्राह्मणों के ऐकाधिकार से निकलकर शूद्र व अन्य पिछड़े वर्ग के लोगों में भी कलात्मक चेतना का अविर्भाव होने लगा। वीणा का प्रयोग धार्मिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिए होने लगा।

उपनिषद काल में बलि के बदले वैराग्य जीवन पर बल दिया गया। उपनिषद के अर्थ गुरु के चरणों में बैठकर गूढ़ ज्ञान प्राप्त करना है। हिन्दू धर्म में कुल 118 उपनिषद माने जाते हैं। इनका उपयोग बौद्ध तथा जैन धर्म के समानान्तर बिना किसी अहिंसा के सत्य के गुप्त मार्ग को खोजना है। वैराग्य में संगीत द्वारा ईश्वर स्तुति तथा प्रार्थना से ईश्वर प्राप्ति का मार्ग सरल है तथा खालीपन को दूर करने में सहायक है।

ईसा से 200 वर्ष पूर्व धर्म सूत्रों का रचनाकाल आरम्भ हुआ जिनका उद्देश्य महाग्रन्थों पर टिप्पणी करना था। तत्पश्चात् गुप्तकाल में तथा इसके परवर्ती काल में धर्मशास्त्रों का उदय हुआ जिनका कार्य हिन्दू विधि–विधान पर आदेश देना। धर्म सूत्रों तथा धर्म शास्त्रों को स्मृति ग्रन्थ भी कहा जाता है। इस काल में जहां मनु जैसे विद्वान ने संगीत को मनुष्य के जीवन को विकृत करने के लिए त्याज्य बताया, वहीं याज्ञवल्क्य ने 'याज्ञवल्क्य स्मृति' में संगीत को मोक्ष प्राप्ति का उत्तम मार्ग माना :–

वीणा वादन तत्त्वज्ञः श्रुति जाति विशारदः।
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्ग पृयच्छति।।

भाव यह है कि जिसने वीणा बजाने के रहस्य को जान लिया हो, जो श्रुति और जाति के ज्ञान पर

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

अधिकार रखता हो और ताल–ज्ञान में निपुण हो, वह बिना किसी प्रयास के मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

नारद ने अपने ग्रन्थ 'नारद संहिता' में संगीत को पाक कला मानकर ईश्वर प्राप्ति का सरलतम् साधन माना है। विष्णु के उत्तर को उद्धृत करते हुए नारद लिखते हैं :–

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न वा।
मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।।

अर्थात् हे नारद! न तो मैं वैकुण्ठ में रहता हूं और न ही योगियों के हृदय में, मैं तो वहां निवास करता हूं, जहां मेरे भक्त जन कीर्तन करते हैं। लगभग ऐसे ही विचार मध्य काल के महान् ईश्वरवेत्ता गुरु नानक के हैं, जो अपनी 'सौदर' रचना में लिखते हैं :–

''सो दर तेरा केहा सो घर केहा जित बहि सरब समाले।
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावन हारे।।''

अर्थात् गुरु नानक स्वयं प्रश्न करते हैं कि वह कौन–सा द्वार है और वह कौन–सा घर है, जहां बैठकर प्रभु समस्त जीवों का ध्यान रखते हैं। उत्तर में स्वयं कहते हैं, प्रभु वहीं विराजमान हैं जहां विभिन्न वाद्य यन्त्र बज रहे हैं तथा आपके अनेक भक्त जन उन्हें बजा रहे हैं।

स्मृति ग्रन्थों में संगीत का स्तर वैदिक युग से निम्न कोटि का होने लगा। संगीत अब धार्मिक समारोह से व्यक्तिगत जीवकोपार्जन का साधन बन गया।

मौर्यकाल, कनिष्क काल तथा गुप्त काल में संगीत का विकास एक स्वतन्त्र कला की ओर बढ़ने लगा। संगीत शिक्षा का प्रबन्ध संगीतशालाओं में होने लगा। संगीत का राजनैतिक दृष्टि से उपयोग मौर्यकाल की एक प्रधान विशेषता मानी जाती थी। सैल्यूकस की पुत्री जो एक उत्तम संगीतकार थी, का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से हो जाने के कारण यूनानी संगीत का आगमन भारत में पहली बार हुआ। फलस्वरूप भारत का संगीत भी पहली बार यूनान पहुंचा। मौर्यकाल में अशोक ने अपने नैतिक तथा आध्यात्मिक उपदेशों को लोगों तक पहुंचाने में संगीत को एक प्रभावी तथा उत्तम माध्यम के रूप में प्रयोग किया।

कनिष्क काल में बुद्ध धर्म के प्रभाव से ब्राह्मणों ने अपने धर्म को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए संगीत का प्रयोग पुनः अपने धार्मिक अनुष्ठानों में आरम्भ कर दिया। परन्तु गुप्तकाल में संगीत का प्रयोग मनोरंजन के रूप में होने लगा। चन्द्रगुप्त के समय ही संगीत विषय पर 'दत्तिलम' नामक एक ग्रन्थ लिखा गया। गुप्तकाल को ललित कलाओं का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल में हमारा संगीत विश्व के अनेक देशों में पहुंचा।

हर्षवर्धन के समय बुद्ध धर्म का प्रभाव भारत में कम होने लगा। यद्यपि माना जाता है कि हर्षवर्धन ने अपने अन्तिम समय में बुद्ध धर्म को अपना लिया था। हर्षवर्धन स्वयं एक अच्छा गायक था। हर्षवर्धन के पश्चात् यवनों के आक्रमण से भारत खण्ड–खण्ड होने लगा। संगीत का विकास मन्दिरों तक सीमित हो गया। इस युग को रोमिला थापर ने पुनः जागरण का काल कहा है। उनके अनुसर ''आठवीं से तेरहवीं शताब्दी तक के काल को कभी–कभी 'अंधकार युग' कहा जाता है। जब हिन्दुओं की उच्च संस्कृति का ह्रास हुआ और राजनीतिक विश्रंखलता के फलस्वरूप एक पूर्णता विदेशी शक्ति को इस उपमहाद्वीप में विजय प्राप्त करने में सुविधा हुई। परन्तु यह अन्धकार

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

युग न होकर निर्माणात्मक युग था जिसका अध्ययन लाभप्रद हो सकता है क्योंकि आज के भारत की अनेक संस्थाएं इसी युग में स्थाई रूप ग्रहण करने लगी थी।''

तेरहवीं शताब्दी के अन्त में खिलजी युग का आरम्भ हुआ। इस युग में अमीर खुसरो जैसे कवि तथा संगीतकार से उत्तर भारत के संगीत में अरब के संगीत को मिश्रित करने से नया रूप हिन्दुस्तानी संगीत हो गया परन्तु दक्षिण भारत में कोई परिवर्तन न होने से वह कर्नाटकीय संगीत हो गया। उत्तर भारतीय संगीत का स्वरूप तुगलक तथा लोदी काल में कव्वाली, गज़ल, ख़्याल, ठुमरी आदि प्रकारों से मुस्लिम रंग में रंगने लगा। मुगलकाल में विशेषकर अकबर (1560–1605 ई.) जब गद्दी पर बैठा, तब संगीत का विकास हुआ। तानसेन, बैजुबावरा, रामदास आदि अनेक शास्त्रीय संगीत के महान् कलाकार थे, वहीं स्वामी हरिदास, सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास, कबीर और वल्लभ सम्प्रदाय के अनेक संगीत विद्वानों ने भक्ति संगीत से मानव के आध्यात्मिक कल्याण के लिए कार्य किया।

गुरु नानक द्वारा भाई मरदाने के साथ प्रारम्भ कीर्तन परम्परा को परवर्ती गुरुओं ने भी जारी रखा जिससे शास्त्रीय संगीत को श्रृंगार से पृथक कर जन–जन में धार्मिक उन्नति का मार्ग अपनाने के लिए प्रशस्त किया। यही धार्मिक संगीत आज गुरमति संगीत के रूप में फल–फूल रहा है।

अंग्रेज़ों के समय भारतीय संगीत की अवनति ज़ोरों पर रही और संगीत गणिकाओं तथा समाज के निम्न वर्ग तक सीमित हो गया। अन्ततः भारत के दो सपूतों पं. विष्णु नारायण भातखण्डे तथा पं. विष्णु दिगम्बर प्लुस्कर ने भारतीय संगीत को नोटेशन प्रणाली तथा संगीत की औपचारिक शिक्षा द्वारा हम सबके लिए बोधगम्य बनाया। सही अर्थों में ये विष्णु भारतीय संगीत की पाक छवि को बचाने में सफल रहे।

सामवेद से प्रारम्भ, संगीत ग्रन्थों की एक लम्बी सूची है। मैं यहां पर कुछ महान् कृतियों का विवरण दे रही हूं जो हिन्दू रचनाकारों ने लिखी हैं परन्तु यह पूर्णतया हिन्दू धर्म पर कोई टिप्पणी नहीं है।

- **नाट्य–शास्त्र** :– कनिष्क काल के उपरान्त 'भरत' द्वारा लिखा यह ग्रन्थ अभिनय तथा संगीत की एक महान् कृति है। इसके 28वें अध्याय से लेकर 33वें अध्याय तक संगीत है। शेष अध्यायों में अभिनय का विवरण है।
- **बृहत्देशी** :– 8वीं शताब्दी में मतंग ने नाट्यशास्त्र में लिखी सभी बातों की पुष्टि की है। मतंग ने देशी रागों की व्याख्या भी की है।
- **संगीत मकरंद** :– नारद कृत यह ग्रन्थ इसलिए प्रसिद्ध है कि इसमें सर्वप्रथम राग–रागनियों का वर्गीकरण किया गया।
- **गीत गोविन्द** :– जयदेव कृत इस ग्रन्थ में राधा–कृष्ण सम्बन्धों के प्रबन्ध गीत हैं जिन्हें आज भी स्वरों में व ताल में बांधकर गाया जाता है।
- **संगीत–रत्नाकर** :– शारंगदेव कृत इस ग्रन्थ का समय 1210 से 1247 ई. माना जाता है। इसमें नाद, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, जाति इत्यादि का विवेचन किया गया। यह

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

कर्नाटकीय तथा हिन्दुस्तानी संगीत का महान् ग्रन्थ माना जाता है।

- **राग–तरंगिणी** :– लोचन (14वीं शताब्दी) द्वारा लिखित इस ग्रन्थ में श्रुति विभाजन तथा 22 श्रुतियों का विवरण है। पं. विष्णु नारायण भातखण्डे, इनके द्वारा दिए गए मुस्लिम रागों 'ईमान और फरदोस्त' के वर्णन को उचित नहीं मानते।
- **स्वरमेल कला निधि** :– दक्षिण भारत के पं. रामामात्य ने 1549–50 ई. में इस ग्रन्थ की रचना की। इसमें उपोद्घात प्रकरण (भूमिका), स्वर प्रकरण (गान्धर्व तथा गान), वीणा प्रकरण (वीणा पर 14 स्वरों को स्थापित किया गया है)। मेल प्रकरण में 20 ठाठों का शुद्ध तथा विकृत स्वरों सहित वर्णन। राग प्रकरण में कुल 63 रागों का वर्णन है।

इसके अतिरिक्त अनेक ग्रन्थ शास्त्रीय संगीत के व्याकरण तथा क्रियात्मक संगीत को सीखने के लिए हिन्दू रचनाकारों ने लिखे जिनके कतिपय नाम हैं – पुण्डरीक विट्ठल (1600 ई. लगभग), सद्राग चन्द्रोदय, रागमाला, राग मंजरी और नृतन निर्णय; सोमनाथ (1690 ई.) – राग विबोध; दामोदर (1625 ई.) – संगीत दर्पण; अहोबल (1665 ई.) – संगीत परिजात; हृदयनारायण देव – हृदय कौतुक और हृदय प्रकाश; वेंकटमुखी (1640–1650 रचनाकाल) – चतुर्दण्डिप्रकाशिका; श्रीनिवास (18वीं शताब्दी) – राग तत्त्व विबोध; कृष्णानन्द व्यास (1842) – संगीत – राग – कल्पद्रुम; राजा सुरेन्द्र मोहन टैगोर (1877) – Six Principles of Ragas (Hindu Music), Universal History of Music; पं. विष्णु नारायण भातखण्डे (1904) – हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मलिका छः भागों में प्रकाशित। संस्कृत भाषा में लक्ष्य–संगीत और अभिनव राग मंजरी तथा अन्य रचनाएं हैं। पं. भातखण्डे ने अपने जीवनकाल में पांच महान् संगीत सम्मेलन करवाए जिनका उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय संगीत को एकरूपता एवं प्रजातान्त्रिक स्वरूप प्रदान करना था।

पं. विष्णु दिगम्बर प्लुस्कर :– संगीत बालबोध, स्वल्यालाप–गायन, संगीत तत्त्व दर्शन इत्यादि। इनकी स्वरलिपि पद्धति पं. भातखण्डे जी से भिन्न है। इन्होंने 5 मई 1901 को लाहौर में गान्धर्व विद्यालय भी स्थापित किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक काल में सामवेद के रूप में प्रसिद्ध भारतीय संगीत का मूल प्रयोजन ब्रह्म से साक्षात्कार करना था इसलिए ऐसे संगीत को मार्गी संगीत कहा जाता था। काल की अवनरत धारा से इसमें अनेक परिवर्तन हुए जिसमें यवनों तथा मुसलमानों का आगमन सबसे बड़ा कारक था। परिणामस्वरूप संगीत एक कला के रूप में मुखरित होने लगा और अपना दैवी रूप खोने लगा। पं. विष्णु नारायण भातखण्डे के अनुसार वर्तमान में प्रचलित भारतीय संगीत में सामवेद, भरत के नाट्यशास्त्र तथा पं. शारंगदेव के 'संगीत रत्नाकर' का कुछ भी उपयोग नहीं हो रहा। आवश्यकता है सामवेद में निहित सांगीतिक सिद्धान्तों को समझकर हिन्दू धर्म के प्रचार के लिए इस्तेमाल किया जाए।

वर्तमान में प्रचलित भजन और कीर्तन का आधार भी फिल्मी संगीत है। इसको त्यागकर शास्त्रीय संगीत को अपनाना चाहिए जो कृष्ण भक्ति के लिए प्रसिद्ध है। पुष्टिमार्गीय संगीत या हवेली संगीत शास्त्रीय संगीत पर आधारित है। इस परम्परा का प्रयोग अनेक स्थानों पर होना

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

चाहिए ताकि हमारा शास्त्रीय संगीत शुद्ध रूप में बरकरार रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1 डॉ. शरतचंद परांजपे, संगीत बोध, पृ. 13
2 ए.एल. वासम, The Wonder That was India, पृ. 309
3 वसन्त, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, पृ. 18
4 आदि ग्रन्थ, अंग 8–9
5 रोमिला थापर, भारत का इतिहास, पृ. 238–39